एक और महत्वाकांक्षी पहल

हर व्यक्ति का एक डिजिटल हेल्थ आईडी होगा, जिसके माध्यम से उसका हेल्थ रेकॉर्ड डिजिटली सुरक्षित रखा जाएगा। मोबाइल ऐप के सहारे कभी भी डिजिटल हेल्थ रेकॉर्ड तक पहुंचना संभव होगा।

आरती शर्मा।।

आयुष्मान भारत योजना की तीसरी वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के रूप में एक और महत्वाकांक्षी पहल की। इस योजना के जरिए पूरे देश के अस्पतालों के डिजिटल हेल्थ सॉल्यूशंस को एक–दूसरे से जोड़े जाने का इरादा है। हर व्यक्ति का एक डिजिटल हेल्थ आईडी होगा, जिसके माध्यम से उसका हेल्थ रेकॉर्ड डिजिटली सुरक्षित रखा जाएगा। मोबाइल ऐप के सहारे कभी भी डिजिटल हेल्थ रेकॉर्ड तक पहुंचना संभव होगा। इसका मतलब यह हुआ कि हर व्यक्ति के लिए अपने स्वास्थ्य से संबंधित रेकॉर्ड को सुरक्षित रखने और डॉक्टर के पास जाने से पहले तमाम रिपोर्ट्स की कॉपी करवाकर साथ ले जाने की जरूरत नहीं रह जाएगी।

इस समय सोच कर भले यह कुछ अनोखी सी बात लग रही हो, लेकिन तकनीक ने बिल पेमेंट और कैश ट्रांसफर जैसे कार्यों को आसान बनाकर हमारी जिंदगी में जिस तरह का गुणात्मक बदलाव किया है, हेल्थ के क्षेत्र में कुछ ऐसा ही युगांतरकारी बदलाव इस नई मुहिम से भी आ सकता है। हालांकि हर नई योजना अपने साथ कई तरह के सवाल और चुनौतियां लेकर आती है। इस योजना में डेटा प्राइवेसी और डेटा सुरक्षित रखने जैसे सवाल हैं। मगर एक अच्छी बात यह है कि आयुष्मान भारत योजना का तीन साल का अनुभव लोगों को इस बात के लिए प्रेरित करेगा कि सवाल उठाने और आशंकाएं व्यक्त करने से पहले यह देखा जाए कि इसे जमीन पर उतारने की प्रक्रिया किस तरह से आगे बढ़ती है और उसके नतीजे किस रूप में सामने आते हैं।

याद किया जा सकता है कि आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत में भी तरह–तरह के सवाल खड़े किए गए थे। इन्हीं सवालों के प्रभाव में कई राज्य सरकारों ने उसे अपनाने से यह कहते हुए इनकार कर दिया था कि उनके यहां पहले से ही दूसरी स्वास्थ्य योजनाएं चल रही हैं, जिनसे लोग लाभान्वित हो रहे हैं। बाद में तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे कई राज्यों ने अपनी पहले से जारी योजनाओं को बरकरार रखते हुए भी आयुष्मान भारत योजना को अपनाने का फैसला किया, जो निश्चित रूप से इसकी कामयाबी का ठोस सबूत है। हालांकि इसका यह मतलब नहीं कि इस योजना में कोई कमी नहीं है। जानकारों के पास उन छोटे–छोटे उपायों की लंबी सूची है, जिन्हें अपनाकर आयुष्मान भारत योजना को व्यवहार में ज्यादा उपयोगी बनाया जा सकता है। मगर सबसे बड़ी बात यह कि चाहे आयुष्मान भारत योजना हो या आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन, यह मौजूदा स्वास्थ्य ढांचे में उपलब्ध संसाधनों तक अधिक से अधिक लोगों की पहुंच को आसान बनाने की कोशिश है। यह बहुत जरूरी है, लेकिन इसके साथ ही संसाधनों की कमी दूर करने यानी डॉक्टरों, नर्सों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों की संख्या बढ़ाने और चिकित्सा उपकरणों और दवाओं की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने पर ध्यान देना भी जरूरी है। उसके बगैर एक सीमा के बाद इन पहलों के निरर्थक होने का खतरा बनने लगता है।

भक्तों से प्रेम

अशोक वोहरा।

अकबर ने नाराज होकर बीरबल से पूछा, "यह किस तरह का मजाक है?" बीरबल ने कहा, "जहांपनाह! आप खुद क्यों इस तालाब में कूदे? आप राजकुमार को बचाने के लिए सेवक को भी भेज सकते थे। आप के पास तो बहुत सारे सेवक हैं, क्या ऐसा नहीं है?" अकबर को वह सवाल याद आ गया, जो उसने बीरबल से भगवान के लिए पूछा था। बीरबल ने आगे कहा, "जिस तरह आप अपने पुत्र से प्रेम करते हैं, उसी तरह भगवान भी अपने भक्तों से प्रेम करते हैं। इस प्रेम के कारण ही वह खुद उनकी रक्षा करने आ जाते हैं। आपने उस दिन पूछा था कि गजेन्द्र को मगरमच्छ से बचाने के लिए भगवान विष्णु खुद क्यों आये थे। अब आपके पास जवाब है।" अकबर ने कहा, "इससे बेहतर मुझे कोई और नहीं समझा सकता था। अब मैं समझ गया।"

संपादकीय

भारी उतार–चढ़ाव

एक और बात है कि गोल्ड में सीमित सट्टेबाजी ही हो सकती है, जबकि क्रिप्टो के साथ ऐसा नहीं है। सट्टेबाजी किसी भी मुद्रा के लिए अच्छी बात नहीं होती। क्रिप्टो के लिए सबसे बड़ा खतरा सरकारें और केंद्रीय बैंक हैं, जो अपनी मुद्राओं के लिए इनसे कोई खतरा नहीं चाहते। इसीलिए भारत सहित कई देशों के केंद्रीय बैंक अपनी डिजिटल करंसी लाने की तैयारी में हैं। कई देश क्रिप्टोकरंसी पर पाबंदी भी लगा सकते हैं, जैसा कि चीन ने किया है। यह भी संभव है कि केंद्रीय बैंकों और देशों की सख्ती के बावजूद कुछ क्रिप्टोकरंसी बची रहें और उन्हें भी एसेट क्लास में शामिल कर लिया जाए। किसी मुद्रा की वैल्यू इस बात से तय होती है कि उसका मालिक उसके बदले कितना सामान या सेवाएं खरीद सकता है। यह बात सही है कि कुछ दुकानों और कंपनियों ने क्रिप्टोकरंसी को स्वीकार करना शुरू किया है, लेकिन यह बात भी समझनी होगी कि बिटकॉइन जैसी करंसी की वैल्यू में भारी उतार–चढ़ाव होता रहता है। हालांकि, अगर आप बहुत जोखिम पसंद नहीं करते तो आपको इन वर्चुअल करंसी से दूर रहना चाहिए। उसकी वजह यह है कि किसी को नहीं पता कि इनका भविष्य क्या होगा।

दुनिया में सोना का सीमित भंडार है। इसके खनन की ऊंची लागत आती है। इसलिए इसकी वैल्यू कम नहीं होती। कहने का मतलब यह है कि सोने में वे सारे गुण हैं, जो किसी भी लंबी अवधि की मुद्रा में होने चाहिए।

गोल्ड की जगह लेने की कोशिश

प्रकाश बालाकृष्णन।।

दुनिया में जितना भी सोना है, उसे ओलिंपिक खेलों में प्रयोग किए जाने वाले चार स्विमिंग पूलों में रखा जा सकता है। दुनिया में हर जगह सोने को लेनदेन के लिए स्वीकार और उसे स्टोर किया जाता है। वजह इसकी वैल्यू है, जो किसी भी मुद्रा का असल काम होता है। दुनिया में सोना का सीमित भंडार है। इसके खनन की ऊंची लागत आती है। इसलिए इसकी वैल्यू कम नहीं होती। कहने का मतलब यह है कि सोने में वे सारे गुण हैं, जो किसी भी लंबी अवधि की मुद्रा में होने चाहिए। 1971 तक ऐसा ही होता भी आया था। लेकिन उसी साल अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने डॉलर और गोल्ड के रिश्ते को खत्म कर दिया। यानी अब डॉलर की वैल्यू अमेरिका के गोल्ड रिजर्व से जुड़ी नहीं रह गई। उसके बाद से सोना बस एक एसेट क्लास बनकर रह गया।

आज क्रिप्टोकरंसी उसी की जगह लेने की कोशिश कर रही है। बिटकॉइन सबसे लोकप्रिय क्रिप्टोकरंसी है, जिसे गोल्ड के गुणों को ध्यान में रखकर लाया गया। इसकी सप्लाई कॉम्प्लेक्स एल्गोरिद्म से नियंत्रित की जाती है, जिससे नई क्रिप्टोकरंसी पर कंट्रोल रखा जाता है। इस कारण गुजरते वक्त के साथ इसकी सप्लाई में कमी आती है। जब सप्लाई एक तय सीमा (2.1 करोड़ कॉइन) तक पहुंच जाती है, तब क्रिप्टो की माइनिंग बंद हो जाती है। यह व्यवस्था इस तरह से बनाई गई है ताकि मांग और आपूर्ति के बीच एक संतुलन बना रहे।

ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित होने के कारण नकली क्रिप्टोकरंसी बनाना असंभव है और इसी वजह से इसे आसानी से ट्रांसफर किया जा सकता है। हालांकि, क्रिप्टोकरंसी में भी चोरी और हैकिंग जैसे खतरे हैं। अगर किसी का लैपटॉप गुम हो जाए या बिना पासवर्ड बताए किसी का निधन हो जाए तो उसकी क्रिप्टोकरंसी 'गुम' हो जाएगी और वह हमेशा के लिए हार्डडिस्क में दफन रहेगी। निवेशक ऐसे जोखिम से सावधानी बरतकर निपट सकते हैं, लेकिन यह भी समझना चाहिए कि क्रिप्टोकरंसी की तुलना गोल्ड से करना मुनासिब नहीं है।

1970 के डॉलर शॉक तक दुनिया की ज्यादातर आधुनिक मुद्राओं की वैल्यू गोल्ड (या सिल्वर) से जुड़ी थी। क्रिप्टो का किसी भी मुद्रा के साथ ऐसा रिश्ता नहीं है। उलटे, बिटकॉइन को इन आधुनिक मुद्राओं के विकल्प के तौर पर पेश किया गया था। दूसरी बात यह है कि जहां मेटल करंसी में गोल्ड और सिल्वर ही शामिल थीं, क्रिप्टोकरंसी की संख्या सैकड़ों में है। इतना ही नहीं, इस संख्या में और बढ़ोतरी होने वाली है। इसलिए, भले ही बिटकॉइन की सप्लाई सीमित रहे, क्रिप्टोकरंसी की सप्लाई इस बुलबुले के फूटने तक असीमित रहेगी।

इसलिए कई क्रिप्टो में निवेश करने वालों के लिए इनकी वैल्यू में कमी आने का खतरा असीमित सप्लाई के कारण बना रहेगा। यह बात और है कि इनमें से कुछ करंसी से कुछ खुशकिस्मत निवेशकों को मुनाफा हो जाए।

सूडोकु बवाल- 5205

★★★★☆ कठिन

	8			6				
					5			
		9				7		3
	1			8				2
			7		4			
6				3			8	
5		7				4		
			8					
				1			6	

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु बवाल -5204 का हल

9	4	5	3	1	8	7	6	2
1	8	6	7	2	5	4	9	3
2	7	3	9	4	6	8	1	5
6	3	9	1	7	4	2	5	8
5	2	4	8	9	3	6	7	1
7	1	8	6	5	2	9	3	4
4	6	7	5	8	1	3	2	9
8	9	1	2	3	7	5	4	6
3	5	2	4	6	9	1	8	7

अपना ब्लॉग

वह याचिका व्यर्थ थी या नहीं

मोहन। कागज के मोटे थुल –थुल पुलिंदे को पूरा पढ़ने के बाद ही बेचारा बाबू निर्णय कर पाता है कि वह याचिका व्यर्थ थी या नहीं। फिर पूरा न पढ़ पाने पर डर है कि 'पैरावाईज कमेन्ट' यानी याचिका के हर अनुच्छेद पर अपनी टिप्पणी देने वक्त कहीं कोई जरूरी तथ्य छूट गया तो गंजे सिर पर भारी मुसीबत ! घंटों की मेहनत के बाद याचिका में से दो– चार पंक्तियाँ ही काम की निकलती हैं। उनपर उस बाबू को बड़े दृ बड़े उत्तर लिखने होते हैं, जैसे– इतिहास–दर्शनशास्त्र की स्नातकोत्तर परीक्षा के उत्तर लिखे जाते हैं। उसे लगता है कि उसके बिना वह न्यायपीठ के सामने विद्वान् नहीं समझा जाएगा। कानून की ऐसी हालत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है। हर वकील या अकाउंटेंट अपनी ओर से यही कहता है कि कागजी दलीलों का मोटा पुलिंदा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के हिसाब से तैयार किया गया है। क्या अधिवक्ता होने के लिए अधिवक्ता होना आवश्यक है ?